रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं । प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं ।
विभुं ब्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं । त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं ।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ।। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ।।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं । कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी ।
गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं।। सदा सज्ज्नानन्ददाता पुरारी ।।
करालं महाकाल कालं कृपालं । चिदानंदसंदोह मोहापहारी ।
गुणागार संसारपारं नतोऽहं।। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं । न यावद् उमानाथ पादारविन्दं ।
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ।। भजंतीह लोके परे वा नराणां ।।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा । न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं ।
लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ।। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ।।
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं । न जानामि योगं जपं नैव पूजां ।
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ।। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ।।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं । जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं ।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ।।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ।।